B.A III[rd] year (Sociology)
Paper I - Perspectives in Sociology
Topic - Max Weber (Verstehende Sociology)

Reading material by -
Professor Sangeeta Pandey
email - sangeeta.pandey1989@gmail.com

Verstehende Sociology

Verstehende sociology (अवबोधात्मक समाजशास्त्र) जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर के समाजशास्त्र को विचारक थियोडोर एबेल द्वारा दिया गया नाम है। वेबर वर्स्टेहन समाजशास्त्र के जनक भी माने जाते हैं। 'वर्स्टेहन' 'Verstehen' जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है understanding या 'बोध' या 'अर्थ की प्राप्ति'। मैक्स वेबर का मानना था कि प्रत्यक्षवादी परिप्रेक्ष्य के प्रयोग से सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं है। उनका विचार था प्रत्यक्षवाद द्वारा केवल सामाजिक घटनाओं का बाह्य अवलोकन कर वस्तुनिष्ठ अर्थ ही प्राप्त किया जा सकता है। जबकि सामाजिक घटनाओं का यह 'बाह्य अवलोकनीय अर्थ' के अतिरिक्त भी एक अर्थ होता है जिसे वेबर 'व्यक्तिनिष्ठ अर्थ' कहते हैं। अर्थात् सामाजिक घटनाओं का वह अर्थ जो 'वास्तविक अर्थ' है जिसे क्रिया को करने वाला व्यक्ति प्रदान करता है। यह व्यक्तिनिष्ठ अर्थ बाह्य अवलोकन द्वारा नहीं स्पष्ट किया जा सकता। यह व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, मनोवृत्तियों के अनुरूप होता है। इस प्रकार किसी भी सामाजिक घटना या सामाजिक

Scanned by CamScanner

क्रिया के 3 सम्भावित अर्थ हो सकते हैं।

① वस्तुनिष्ठ अर्थ, (जो वाह्य अवलोकन से प्राप्त होता है।)

② तत्वदार्शनिक रूप से सही अर्थ (वह अर्थ जो तत्व मीमांसा से प्राप्त होता है)

③ व्यक्तिनिष्ठ अर्थ (वह अर्थ जो स्वयं क्रिया करने वाले व्यक्ति द्वारा लगाया जाता है)

यही 'व्यक्तिनिष्ठ अर्थ' प्रत्यक्षवादी परिप्रेक्ष्य और प्राकृतिक विज्ञानों में प्रयुक्त वैज्ञानिक पद्धति (अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण) द्वारा प्राप्त करना सम्भव नहीं इसे निर्वचनात्मक पद्धति प्राप्त किया जा सकता है। वेबर ने 'समाजशास्त्र' को इसी आधार पर निम्न प्रकार से परिभाषित किया:—

"समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया के निर्वचनात्मक अवबोध का और इसके द्वारा उसकी प्रक्रिया और प्रभावों की कारणात्मक व्याख्या तक पहुँचने का प्रयास करता है"। (Max weber, Theory of Social and economic organisation)

Abraham ने अपनी पुस्तक 'Sociological Theory' में वेबर के 'वर्स्टेहन' के विषय में लिखा—

"Verstehen makes possible the scientific study of social behavior in two ways— It facilitates direct observational understanding of the subjective meaning of human actions; It facilitates understanding of the underlying motive."

Raymond Aron ने मैक्सवेबर को वर्स्टेहन सोशियोलॉजी का जनक माना है। थियोडोर हेबेल ने वेबर के समाजशास्त्र को अवबोधात्मक समाजशास्त्र का नाम दिया।

Scanned by CamScanner

वस्टेहन समाजशास्त्र की मुख्य विशेषताएं

(1) अवबोधात्मक या वस्टेहन समाजशास्त्र एक विज्ञान है।

(2) अवबोधात्मक समाजशास्त्र की मुख्य विषयवस्तु व्यक्तियों की 'सामाजिक क्रियाएं' हैं।

(3) अवबोधात्मक समाजशास्त्र 'सामाजिक क्रियाओं के अर्थ' की प्राप्ति को ही अपना अध्ययन लक्ष्य मानता है।

(4) अवबोधात्मक समाजशास्त्र कर्ता द्वारा लगाये गये अर्थ को ही 'वास्तविक रूप से विद्यमान अर्थ' मानता है। और इसे ही प्राप्त करना अध्ययन का लक्ष्य स्वीकारता है।

(5) 'आदर्शप्रारूपीय अर्थ' प्राप्त करना भी इसमें महत्वपूर्ण है।

(6) आदर्शप्रारूपीय अर्थ इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी की सहायता से 'वास्तविक रूप से विद्यमान' अर्थ भी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

(7) अवबोधात्मक समाजशास्त्र में 'सामाजिक क्रिया' के अवबोध या जानकारी हेतु 'व्याख्यात्मक अवबोध' या 'प्रयोजनात्मक अवबोध' ही महत्वपूर्ण होता है। 'प्रत्यक्ष अवलोकनात्मक अवबोध' नहीं।

(8) अवबोधात्मक समाजशास्त्र की पद्धति - 'निर्वचन' की पद्धति है।
निर्वचन के वेबर 3 प्रकार बताते हैं:-

1. भाषाशास्त्रीय निर्वचन
2. मूल्यांकनात्मक निर्वचन
3. विवेकसंगत निर्वचन

वेबर सामाजिक क्रिया के अवबोध हेतु - 'विवेकसंगत निर्वचन' को ही महत्वपूर्ण बताते हैं।

Scanned by CamScanner

Critical views:

George Ritzer Weber के 'Verstehen' ~~सम्बन्धी~~ विचारों को अपनी पुस्तक Classical Sociological Theory, 6th edition, 2016 में लिखा-

1. "Weber felt that sociologists had an advantage over natural scientists That advantage resided in Sociologists ability to understand social phenomena, whereas natural scientist could not gain a similar understanding of the behavior of an atom or Chemical compound..."

इस प्रकार स्पष्ट है कि वेबर Verstehen प्रणाली के द्वारा सामाजिक व्यवहारों के विश्लेषण को सामाजिक विज्ञानों की एक उपलब्धि मानते थे।

2. Thomas Burger ने Max Weber's Theory of concept Formation: History, Laws and Ideal Types. Durham, N.C: Duke University Press, 1976. में लिखा— .

   "Weber was neither very sophisticated nor very consistent in his methodological pronouncements. He tended to be careless and imprecise because he felt that he was simply repeating ideas that were well known in his day among German Historians..."

3. Weber आलोचकों के विचारों से सहमत नहीं थे उनके अनुसार 'Verstehen' को 'soft', 'irrational', 'subjective' research methodology कहा जाना सही नहीं है। वेबर के लिए 'Verstehen' अध्ययन की एक तार्किक प्रणाली है (Ritzer ibid, Pg 222-223)

X———————X

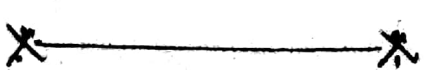

Scanned by CamScanner